महत्वपूर्ण एवं खास

विदेशी निवेश पर भरोसा

लगता है देश में विकास को गति देने और रोजगार के अवसर बढ़ाने के मकसद से केंद्र सरकार ने विदेशी निवेश को बढ़ावा देने का मन बना लिया है। स्मार्ट सिटी योजना समेत अन्य महत्वाकांक्षी योजनाओं के लिये जिस पूंजी की जरूरत है, उसकी पूर्ति के लिये प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के दरवाजे खोले जा रहे हैं। यही वजह है कि जिन नीतियों का विपक्ष में रहते भाजपा विरोध करती रही है, उसी राह पर राजग सरकार ने कदम बढ़ा दिये हैं। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को लेकर जो फैसले लिये हैं, उसके पार्श्व में 2019 के आम चुनाव भी हैं ताकि वायदे हकीकत में बदलते दिखाये दें, क्योंकि प्रधानमंत्री की तमाम विदेश यात्राओं के बावजूद अपेक्षित विदेशी निवेश हासिल नहीं हुआ। बहरहाल, मंत्रिमंडल के हालिया फैसले के बाद सरकार ने एकल ब्रांड खुदरा कारोबार और भवन निर्माण के क्षेत्र में सौ फीसदी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का रास्ता खोल दिया है। अभी तक इसके लिये सरकार से विशेष अनुमति लेनी पड़ती थी। साथ ही सरकार पर बोझ बने एअर इंडिया में 49 प्रतिशत विदेशी निवेश का रास्ता खोल दिया। अभी तक यह केवल निजी विमान कंपनियों में संभव था। सरकार इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि अब एअर इंडिया में और सार्वजनिक पूंजी लगाना अक्लमंदी नहीं है। बहरहाल, इससे आशा जगी है कि अब एअर इंडिया का विकास पेशेवर तरीके से हो पायेगा। वहीं दूसरी ओर सरकार ने मल्टी ब्रांड खुदरा कारोबार को पूरी तरह विदेशी निवेश के लिये नहीं खोला है। जिसका मकसद स्वदेशी कारोबार को संरक्षण देना भी है, जिसमें एक बड़ी आबादी को रोजगार मिला है। वहीं एकल ब्रांड खुदरा कारोबार में लगी कंपनियों के लिये शर्त रखी गई है कि उन्हें पांच साल तक तीस फीसदी भारतीय माल का उपयोग करना होगा।?अन्यथा इससे देशी कंपनियों और उत्पादकों को कई तरह की चुनौतियां का सामना करना पड़ सकता है। वहीं विनिर्माण के क्षेत्र में बिना सरकार की अनुमति के सौ फीसदी निवेश के चलते बड़ी इमारतों व कॉलोनियों का निर्माण किया जा सकेगा।

आय पर टैक्स की कैंची

अपने पिछले बजट में वित्तमंत्री अरुण जेटली ने कोशिश की थी कि निजी आयकर प्रणाली को ज्यादा उदारवादी बनाया जाए ताकि लोगों को परेशानी भी न हो और कर के नाम से जो मन में डर बैठा है, वह भी दूर हो जाए। इसका सीधा असर कर वसूली के आंकड़ों में देखने को मिला जो दिसंबर 2017 तक उछलकर 18 फीसदी तक जा पहुंचे। उनके इस पग से सबसे बड़ा फायदा निम्नतर आयकर स्लैब यानी ढाई से 5 लाख रुपए वाले करदाताओं को हुआ, जिनकी दर महज पांच फीसदी तक सीमित थी। इस स्लैब वाले पहली बार के करदाताओं को कागजों की पूछ-पड़ताल आदि से भी छुट्टी थी। आयकर दर को ज्यादा तर्कसंगत तथा आयकर प्रशासन को ज्यादा उत्तरदायी बनाने के जेटली द्वारा दिए गए आश्वासन ने एक और बढ़िया काम यह किया कि इससे आधारभूत कर का प्रसार पुख्ता हुआ। वित्तमंत्री के आश्वासनों से अभिभूत होकर बहुत से लोग विशेषकर 18 से 30 साल के बीच का युवा वर्ग इस कर के मकड़जाल में फंस गया। इन युवाओं ने धड़ाधड़ पैनकार्ड बनवाने शुरू कर दिए क्योंकि वे सही मायनो में ईमानदार नागरिक बनना चाहते थे। इनमें से सभी तो नहीं, कुछ भद्र करदाता भी थे, जो अब दुरूह नियमों, बेतहाशा बढ़ी कर दरों और भ्रष्ट टैक्समैन की ज्यादतियों का बुरी तरह शिकार हो रहे हैं। अब लोगों को उम्मीद है कि नए बजट में भी कर प्रणाली को आसान बनाने के साथ-साथ कर दरों में कटौती होगी, विशेषकर निम्न आयकर स्लैब वाले करदाताओं के लिए। कर अधिकारियों के पास अब लगभग 35 करोड़ पैन कार्ड हैं जो कार्ड होल्डरों के बैंक से सीधे जुड़े हैं।

डराने वाली बेकारी की लाचारी

राजस्थान विधानसभा सचिवालय में चपरासी के सत्रह पदों की रिक्तियों के लिए साढ़े बारह हज़ार लोगों द्वारा प्रार्थनापत्र भेजना अपने आप में एक चौंकाने वाला समाचार है। लेकिन इस समाचार की गंभीरता तब और बढ़ जाती है जब यह पता चलता है कि चपरासी बनने के लिए कतार में खड़े इन उम्मीदवारों में 129 इंजीनियर, 23 वकील, एक चार्टर्ड एकाउंटेट, 393 स्नातकोत्तर और डेढ़ हज़ार से अधिक स्नातक हैं! और जब यह पता चलता है कि चपरासी के पद के लिए आवश्यक अर्हता मात्र पांचवीं पास होना है तो स्थिति की गंभीरता और विडंबना दोनों सामने आ जाती हैं। जहां ये आंकड़े देश में बेरोजगारी की स्थिति की भयानकता का संकेत दे रहे हैं, वहीं उच्च शिक्षा प्राप्त प्रार्थियों का इस तरह रोज़गार की कतार में खड़ा होना हमारी शिक्षा प्रणाली और शिक्षा की उपादेयता, दोनों, पर प्रश्नचिन्ह लगा रहा है। यह समाचार छपा तो सही अखबारों में, पर इस तरह से नहीं कि स्थिति की भयावहता का अहसास करा पाता। जहां अखबारों ने इसे महत्व नहीं दिया जो मिलना चाहिए था, वहीं समाचार चैनलों ने भी इसे शायद टीआरपी के लिए उपयोगी नहीं समझा। खबर सामने आयी भी तो इस रूप में कि अंततः चपरासी की नौकरी पाने वालों में दसवीं पास एक व्यक्ति भी था, जो एक विधायक का बेटा था। यह बात सामने लाने वालों का मकसद यह बताना था कि विधायक ने अपने पद का इस्तेमाल करते हुए अपने बेटे को नौकरी दिलवा दी! लेकिन यहां महत्वपूर्ण विधायक के बेटे का नौकरी पाना नहीं है, महत्वपूर्ण है यह तथ्य कि सारे दावों के बावजूद देश के युवाओं को रोज़गार नहीं मिल पा रहा। घोषणाएं तो बहुत बड़ी-बड़ी होती रही हैं इस बीच, आकर्षक योजनाओं की भी कमी नहीं है ङ्क कौशल विकास से लेकर स्टार्ट अप जैसे कई लुभावने नारे हवा में तैर रहे हैं। पर इस सबका लाभ बेरोज़गार युवाओं को नहीं मिल पा रहा। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2011-12 में देश में बेरोज़गारी की दर 3.8 प्रतिशत थी, जो 2015-16 में बढ़कर पांच प्रतिशत हो गयी। हमारे यहां एक प्रधानमंत्री रोज़गार-उत्पादक कार्पाम चल रहा है। इस कार्पाम में भी पिछले पांच सालों में 24.4 प्रतिशत की कमी आयी है। इस दौरान एक बात और भी हुई है हमारे यहां कि वर्ष 2016-17 के आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार देश में स्थाई रोज़गार की जगह अस्थायी और अनुबंध वाले रोज़गार को बढ़ावा मिला है। फलस्वरूप एक असुरक्षा का भाव देश के युवाओं में पनप रहा है। शायद इसी का परिणाम है कि स्नातक, स्नातकोत्तर और इंजीनियरिंग जैसे प्रशिक्षण प्राप्त युवा चपरासी बनने के लिए लालायित दिख रहे हैं। यहां इसे भी रेखांकित किया जाना ज़रूरी है कि अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार सन् 2017-18 में भारत में रोज़गार की स्थिति बेहतर होने के आसार नहीं हैं। साल 2016 में बेरोज़गारों की संख्या लगभग 178 लाख थी, जिसके 2018 में 180 लाख से भी अधिक बढ़ जाने की आशंका है। और जहां तक बेरोज़गारी की परिभाषा का सवाल है, हमारे देश में इसका आधार यह है कि साल में तीस दिन पूरा काम पाने वाले व्यक्ति को बेरोज़गार नहीं माना जाता है! बेरोज़गारी का यह आलम निश्चित रूप से देश की चिंता का विषय है। राजस्थान विधानसभा के सचिवालय में नौकरियों के लिए लंबी कतार अकेला उदाहरण नहीं है अपनी तरह का। कुछ ही महीने पहले हरियाणा में भी ऐसा ही एक दृश्य दिखाई दिया था। वहां हिसार में सत्र न्यायालय में सत्रह हज़ार चपरासियों की भर्ती होनी थी और इन पदों के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवारों की संख्या लगभग पंद्रह हज़ार थी! वहां भी चपरासी बनने के लिए आतुर उम्मीदवारों में पीएचडी, एमएससी, बीसीए की डिग्रियां प्राप्त करने वाले शामिल थे। कुछ ही साल पहले उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भी ऐसा हादसा दिखा था। वहां तो प्रार्थियों की संख्या एक लाख से भी अधिक हो गयी थी और उनमें से अधिकांश ऊंची-ऊंची डिग्रियों वाले थे! हां, इस स्थिति को हादसा ही कहा जाना चाहिए। भयानक हादसा है यह। और विशेषता यह है कि जो हुआ है, या हो रहा है वह तो भयानक है ही, इसके परिणाम यहीं तक सीमित नहीं हैं। यह देश की युवा-शक्ति की वर्तमान तस्वीर का एक पहलू ही नहीं दिखाता, आने वाले समय में तस्वीर के और बदरंग हो जाने की आशंका भी जताता है। यह स्थितियां हताशा पैदा करने वाली हैं। बेरोज़गारी की यह भयावह वास्तविकता वस्तुतः एक चेतावनी है हमारे देश, हमारे समाज के लिए। हताशा की स्थिति नकारात्मक ताकतों को बढ़ावा देने की ज़मीन तैयार करती है, इसलिए इस खतरे को समझना और उससे उबरने की कोशिशों को तेज करना ज़रूरी है।

किताबों से मोहभंग चिंता की बात

दिल्ली के प्रगति मैदान में छह जनवरी से शुरू हुआ अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला 14 जनवरी तक चलेगा। मगर अब जिस तरह से मौसम चक्र बदला है, उसमें जनवरी के पहले हफ्ते से ही मेले का शुरू हो जाना अखरता है। पूरे उत्तर भारत में इस बार ठंड की गलन ही पहली जनवरी से शुरू हुई, इसलिए पुस्तक मेले में अपेक्षित भीड़ नहीं जुट पाती, खासकर बच्चों की। जबकि पुस्तक मेला बच्चों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी बहाने ही सही, वे पुस्तकों से जुड़ते तो हैं। पहले यह मेला फरवरी में हुआ करता था। इसलिए लोगबाग अपने बच्चों को साथ लेकर आते थे। मगर इस बार ऐसा नहीं दिखा। मज़े की बात कि मेले का समय शाम आठ बजे तक का है, लेकिन छह के बाद यहां सन्नाटा छा जाता है। यूं भी आज बच्चे जिस तरह किताबों से दूर होते जा रहे हैं, ऐसे में पुस्तक मेले में उनकी आमद आवश्यक है। क्योंकि कुछ भी हो, पढ़ी हुई चीज़ स्मृति में अटल रहती है। आज भी अधिकांश लोगों को बचपन में पढ़ी हुई कविताएं, कहानियां और संस्मरण जस के तस याद हैं। इसके विपरीत दूरदर्शन और डिजिटल माध्यम से देखी हुई चीज़ें जल्द ही स्मृति से गायब हो जाती हैं। यह ठीक है कि चालीस की उम्र वाली पीढ़ी का आज रामायण-महाभारत जैसे 'एपिक्स' से परिचय टीवी सीरियल देख कर हुआ, लेकिन उनकी जड़ में तो वे ग्रन्थ ही थे, जो हज़ारों साल पहले रचे गए। इसलिए पुस्तकें पढ़ना समाज के हर उम्र के लोगों के लिए जरूरी है। यह ठीक है कि पुस्तक मेले में लोग आ रहे हैं। लेकिन हर आदमी वहां से जल्द निकलने की कोशिश में भी रहता है। जब यह मेला फरवरी में होता था, तब लोग रुकते थे। जनवरी में मेला कराने की शुरुआत 2013 से हुई थी, वह भी इसलिए क्योंकि तब इस मेले में चीन को विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया था। चीन की शर्त थी कि मेला फरवरी में नहीं हो, क्योंकि फरवरी में उनका नया साल मनाया जाता है और तब चीन के लोग उसी में मगन रहते हैं। इसलिए उस वर्ष पुस्तक मेला जनवरी में रखा गया। किन्तु इसके बाद प्रगति मैदान वालों ने भी पुस्तक मेला के आयोजकों पर दबाव डाला कि पुस्तक मेला जनवरी में ही कराया जाए। इसकी वजह यह भी थी कि जनवरी में प्रगति मैदान खाली रहता है। हालांकि पुस्तक मेले के लिए सर्वथा उपयुक्त समय तो 14 फरवरी के बाद का ही है लेकिन अगर यह 26 जनवरी के ठीक बाद से शुरू किया जाए, तो भी बुरा नहीं। किन्तु जनवरी के पहले हफ्ते में तो इसे कतई नहीं कराया जाना चाहिए। इससे सबसे अधिक नुकसान पाठकों को होता है। खासकर उन्हें जो पुस्तकें खरीदने के चाव में लखनऊ, पटना, कानपुर, भोपाल, जयपुर और पंजाब के शहरों से आते हैं। एक तो इन दिनों कोहरे की मार के चलते ट्रेनें लेट रहती हैं और खुद के वाहन से दूर का सफ़र जोखिम भरा होता है।

ये जो सबसे सस्ता

देखिए, महंगाई की बात तो बेकार है। यह फालतू का मुद्दा है। इसे तो विपक्ष तक नहीं उठाता। पर अब इसके बाद सवाल यह आता है कि फिर सस्ता क्या है? और इससे भी अगली बात यह कि सबसे सस्ता क्या है। किसान ने कहा-सबसे सस्ती तो मेरी जान ही है। इससे सस्ता दुनिया में कुछ नहीं मिलेगा। यह पंजाब में भी इतनी ही सस्ती है और महाराष्ट्र-तमिलनाडु तक में उतनी ही सस्ती है। और सबसे अच्छी बात यह है कि यह जान मैं खुद देता हूं। इसके लिए कोई जिम्मेदार नहीं होता। न सूदखोर जिम्मेदार होता है और न ही कोई सरकार। न केंद्र की सरकार और न राज्य की सरकार। जान हथेली पर रखकर चलने वाले बहुत मिलेंगे। लेकिन किसान जैसा कोई नहीं मिलेगा। बल्कि इसके लिए तो कोई मुआवजा भी नहीं देना पड़ता। लेकिन किसान की बात कौन मानता है साहब। एक ढाबे वाले ने कहा-अरे साहब क्या कर दी। मेरी जान तो सबसे सस्ती है। एक पराठे के बदले भी जा सकती है। एक पनवाड़ी ने कहा कि परांठा तो फिर भी महंगा होता है। मेरी जान तो एक सिगरेट के लिए चली जाती है। इससे सस्ती जान तुम्हें और कहां मिलेगी। एक राहगीर ने कहा-अरे साहब मेरी जान तो मुफ्त में जाती है। बाद में जब मारने वाला उसकी कीमत वसूल करने के लिए जेब की तलाशी लेता है तो उसमें दो-चार रुपए के सिक्के मिलते हैं। बस! ऐसे लोगों को धमका कर ही चुप कराना पड़ता है कि भैया बाजार में तुम्हारी डिमांड नहीं है। इनसान की जान सस्ती है, यह तो सब जानते हैं। तुम क्यों बढ़-चढ़कर बता रहे हो कि सबसे सस्ती मेरी जान है। भैया बात इनसान की हो ही नहीं रही। इस पर टमाटर ने कहा कि मैं तो सस्ता कतई नहीं हूं जी। प्याज ने कहा-मैं सिर्फ किसान के खेत में और मंडी में ही सस्ता हूं, उपभोक्ता के किचन तक पहुंचते-पहुंचते तो मैं हमेशा ही महंगा होता हूं। आलू ने कहा-इन दिनों मैं सस्ता हूं। योगीजी के द्वार पड़ा हूं। आपने अखबारों और टीवी पर फोटो भी देखे होंगे।

इसमें गलत क्या है

एफडीआई ऐसा शब्द है जिसका उपयोग हमारे देश में आर्थिक विमर्श से अधिक राजनैतिक विमर्श में होता है. कुछ लोग एफडीआई को देश को गिरवी रखने जैसा मानते हैं, जबकि असल में यह सिर्फ एक व्यापारिक निर्णय है. एफडीआई के तीन मुख्य लक्ष्य होते हैं. निवेश की वृद्धि, आय और रोजगार. ध्यान देने वाली बात है कि सिर्फ एफडीआई खोल देने मात्र से निवेश नहीं आता है. विदेशी निवेश आकर्पित होता है-व्यापार की सुगमता,राजनैतिक स्थिरता, विदेशी मुद्रा की मजबूती,सतत आर्थिक नीति, मजबूत सामरिक व्यवस्था, कच्चे माल की उपलब्धता, एक्सपर्ट श्रमिकों की उपलब्धता, ढांचागत सुविधाएं, मजबूत संवैधानिक संस्थाएं, उचित श्रमिक कानून एग्जिट सुविधा आदि उपलब्ध होने पर. बदलते वैश्विक माहौल में आर्थिक मजबूती ही देश की एकता के लिए अहम है. खुलेपन की अर्थव्यवस्था को अपना कर चीन उत्तरोतर मजबूत हुआ और न अपना कर सोवियत रूस ग्यारह देशों का समूह बन गया. आज एफडीआई के महत्त्व को रूस भी समझता है. चीन पहले से और भी अधिक समझता है. एफडीआई में लगातार सुधारों एवं नए-नए सेक्टरों में निवेश खोलने में भारत एक बड़े और आत्मविश्वास से लबरेज़ देश की तरह व्यवहार कर रहा है. वह विश्व के सबसे बड़े उभरते बाज़ारों में से एक होने के अलावा, कम उम्र एवं तकनीकी ज्ञान संपन्न नवयुवकों का देश है. दब्बूपन और संरक्षणवादी नीतियों को ओढ़ कर भारत अब नहीं बैठा है. आज हम विश्व भर के देशों के उपग्रहों को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित करते हैं. हमने देसी तकनीक विकसित की और विदेशियों को अपनी सेवाएं बेचीं. यह आत्मविश्वास हमारे ब्रांड को उन्नत करता है और विदेशी निवेश अच्छा देश बनाता है.

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं

1. संघर्ष, दौड़धूप (उर्दू.) 5. सुपुत्र, लायक पुत्र 7. ताकतवर, बलशाली 9. खुशबू, सुरभि, सुगंध 10. अकारण, व्यर्थ, बेवजह 12. गर्म तेल आदि में खाद्य वस्तु छोड़कर पकाना 13. यात्रा 15. मृत, जो मर गया हो 16. छोटे कद का, वामन, बौना 18. सांप का सिर, गुण, कला, कौशल 20. निरुत्तर, बेमिसाल 23. गोल हरे दानों वाला एक प्रसिद्ध पौधा, या इस पौधे की फली 24.माता, जननी 25. संतान, औलाद 26. अधीन, अधीनस्थ, कर्मचारी 27. चिड़िया, खग तरफदार।

ऊपर से नीचे

1.पानी में डूबा हुआ, जल प्लावित 2. पाकेटमार, जेब काटने वाला 3. समाधान, खेत जोतने का यंत्र 4. औषधालय 6. युक्ति, उपाय 8. गीला, तर, भीगा हुआ 11. झटके से मुंह से आवाज के साथ हवा बाहर आना, बलगम आदि का बाहर आना 14. तुरंत, झटपट 15. स्त्री, नारी, अबला 17. एक और एक चौथाई 19. आदमखोर 21. दुनिया, संसार, जग 22. वर्ष की छः ऋतुओं में एक ऋतु जिसमें मौसम सुहावना रहता है 23. बुद्धि, दिमाग।

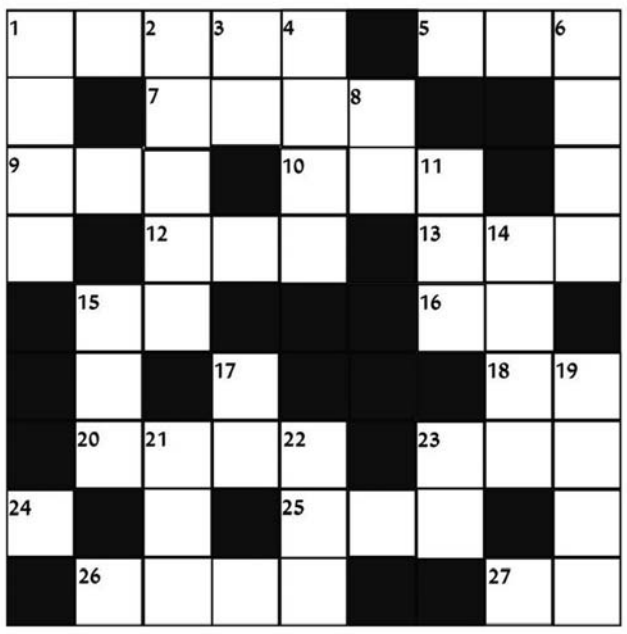

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 91 का हल

पी	चि	दं	ब	र	म	■	■	स
ट	■	भ	ला	ई	■	अ	स	म
ना	म	■	■	स	मा	धि	■	झ
■	ज	■	बे	■	न	का	र	ना
बा	बू	■	आ	य	क	र	■	■
■	र	की	ब	■	■	■	प्र	था
ज	■	■	रू	प	क	■	ज	न
हा	■	पा	■	ना	म	ची	न	■
ज	हां	प	ना	ह	■	ता	न	ना

सू-दोकू

	7			4		3		
2			3			9		4
	6			2				
3		1			7		4	
	2			1			6	
8			9		4			1
		2		3		7		
1			7		2	4		3
	5	3		8			7	2

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.91 का हल

9	2	8	3	1	5	7	4	6
4	1	6	8	9	7	2	5	3
7	3	5	4	6	2	8	1	9
2	7	3	9	8	1	4	6	5
5	4	1	6	7	3	9	2	8
6	8	9	2	5	4	1	3	7
3	6	2	7	4	9	5	8	1
8	5	7	1	2	6	3	9	4
1	9	4	5	3	8	6	7	2

राशिफल

मेष- कार्यक्षेत्र मे भी आपके पक्ष मे कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, इससे व्यथित होकर साथियों का मूड कुछ खराब हो सकता है।

वृष- आर्थिक दिशा में सफलता मिलेगी। ससुराल पक्ष से लाभ होगा।

मिथुन- पिता के आशीर्वाद तथा अधिकारियों की कृपा से किसी बहुमूल्य वस्तु अथवा संपत्ति की प्राप्ति की अभिलाषा आज पूरी होगी।

कर्क- अकस्मात बड़ी मात्रा में धन की प्राप्ति होगी। व्यावसायिक योजनाओं को गति मिलेगी।

सिंह- व्यावसायिक रूप से आपकी तारिफ होगी और आपके प्रयासों को सराहा जायेगा।

कन्या- भाग्य की दृष्टि से आज का दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक तौर पर आप अच्छी वृद्धि प्राप्त कर लेंगे।

तुला- आज का दिन आपके लिए चुनौतीपूर्ण रहेगा। सभी की उम्मीदों पर खरा उतरने की आपकी विशेषता आज भी आपको यश देगी।

वृश्चिक- नई शुरुआत का दौर है एवं कार्यक्षेत्र में भी कोई नया प्रोजेक्ट शुरू करने की इच्छा रखेंगे, जिसमें अच्छे परिणाम भी आपको मिलेंगे।

धनु- आज घर की चीजों पर धन का खर्चा होगा। सांसारिक सुख भोग के साधनों में वृद्धि होगी।

मकर- आज व्यवसायिक क्षेत्र में मन के अनुकूल लाभ होने का हर्ष होगा।

कुंभ- किसी संपत्ति के खरीद-फरोख्त के समय उसके पूर्व संपत्ति के सारे वैधानिक पहलुओं पर गंभीरता से विचार कर लें।

मीन- कार्यक्षेत्र में जितनी कोशिशें आप करते रहेंगे अंत में उतनी ही सफलता आपको मिलेगी।